IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 13, 2022

सामाजिक दृष्टिकोण और इसके भिन्न भिन्न भाग में भागीदारीः एक सामाजिक दृष्टिकोण

डॉ. राहुल
सहायक प्रोफेसर, (समाजशास्त्र)
गांधी आदर्श कॉलेज
समालखा, पानीपत
हरियाणा – 132101

सार

सामाजिक असमानता आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्रों सहित समाज के विभिन्न क्षेत्रों में भागीदारी को गहराई से प्रभावित करती है। यह अध्ययन सामुदायिक गतिविधियों में व्यक्तिगत भागीदारी पर आय, शिक्षा, लिंग और नस्ल जैसे कारकों के प्रभाव का विश्लेषण करके सामाजिक असमानता और भागीदारी के बीच संबंधों की खोज करता है। सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि में विविधता सुनिश्चित करने के लिए उद्देश्यपूर्ण नमूनाकरण का उपयोग करके दिल्ली एनसीआर से 150 उत्तरदाताओं का एक नमूना चुना गया था। संरचित साक्षात्कार, सर्वेक्षण और सांख्यिकीय विधियों जैसे कि एनोवा, ची–स्क्वायर और सहसंबंध विश्लेषण के संयोजन का उपयोग करते हुए, अध्ययन इस परिकल्पना का परीक्षण करता है कि असमानता भागीदारी को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है। निष्कर्ष बताते हैं कि आय और शिक्षा सामाजिक भागीदारी के महत्वपूर्ण निर्धारक हैं, जबकि लिंग राजनीतिक भागीदारी को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित नहीं करता है। अध्ययन आर्थिक असमानता को दूर करने और समावेशी भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए शैक्षिक पहुँच में सुधार करने के लिए नीतिगत हस्तक्षेप की आवश्यकता पर प्रकाश डालता है।

मुख्य शब्दः सामाजिक असमानता, भागीदारी, आर्थिक विषमता, लिंग, शिक्षा, आय, राजनीतिक भागीदारी, दिल्ली एनसीआर।

1 परिचय

सामाजिक असमानता एक गहरी जड़ जमाई हुई और व्यापक घटना है जो समाज के विभिन्न क्षेत्रों को प्रभावित करती है, व्यक्तियों के जीवन के अवसरों और परिणामों को प्रभावित करती है। यह कई रूपों में प्रकट होता है, जिसमें आर्थिक असमानता, नस्लीय भेदभाव, लैंगिक असमानता और संसाधनों और अवसरों तक असमान पहुँच शामिल है (फ्रेजर, 2019)। ये असमानताएँ व्यक्तियों और समूहों के अनुभवों को आकार देती हैं, जो सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक जीवन में पूरी तरह से भाग लेने की उनकी क्षमता को प्रभावित करती हैं। सामाजिक असमानता और भागीदारी के बीच का संबंध जटिल और बहुआयामी है। असमानता अक्सर संसाधनों और अवसरों तक कम पहुँच की ओर ले जाती है, जिससे व्यक्तियों की सामाजिक प्रक्रियाओं में शामिल होने की क्षमता सीमित हो जाती है। सामाजिक गतिशीलता, राजनीतिक भागीदारी और आर्थिक सशक्तीकरण विशेष रूप से हाशिए के समूहों के लिए विवश हैं। इस संदर्भ में भागीदारी, सामुदायिक गतिविधियों, राजनीतिक निर्णयों और आर्थिक उपक्रमों जैसी विभिन्न सामाजिक प्रक्रियाओं में एक व्यक्ति की भागीदारी को संदर्भित करती है। हालाँकि, सामाजिक असमानताएँ कुछ समूहों के लिए संरचनात्मक और प्रणालीगत बाधाएँ बनाकर सक्रिय भागीदारी में बाधा डालती हैं। इन बाधाओं के परिणामस्वरूप एजेंसी और सशक्तीकरण की भावना कम हो जाती है, जिससे हाशिए पर पड़े व्यक्तियों के लिए उस समाज को आकार देने में सार्थक रूप से शामिल होना मुश्किल हो जाता है जिसमें वे रहते हैं। इस शोधपत्र का उद्देश्य यह पता लगाना है कि सामाजिक असमानता भागीदारी को कैसे प्रभावित करती है और सामाजिक प्रक्रियाओं के लिए इसके निहितार्थों को समझना है। मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों दृष्टिकोणों से भागीदारी की जांच करके, यह अध्ययन इस बात की जांच करता है कि असमानताएं किस हद तक भागीदारी में बाधा डालती हैं, साथ ही उन अंतर्निहित तंत्रों की भी जांच करता है जिनके माध्यम से ये बाधाएं पैदा होती हैं। अध्ययन आय, शिक्षा, लिंग और जाति सहित विभिन्न सामाजिक आयामों पर ध्यान केंद्रित करता है, जो भागीदारी को प्रभावित करने वाले प्रमुख चर हैं।

2. साहित्य समीक्षा

सामाजिक असमानता और भागीदारी पर साहित्य समाज में व्यक्तियों द्वारा अनुभव किए जाने वाले बहिष्कार के विभिन्न रूपों के बारे में जानकारी प्रदान करता है। सामाजिक बहिष्कार का लंबे समय से हाशिए पर पड़े समूहों पर पड़ने वाले प्रभाव के संबंध में अध्ययन किया जाता रहा है, खास तौर पर लिंग, नस्ल और सामाजिक–आर्थिक स्थिति के संदर्भ में। फ्रेजर (2019) इस बात पर प्रकाश डालता है कि धन वितरण में असमानता लोगों की शिक्षा, रोजगार और राजनीतिक भागीदारी सहित अवसरों तक पहुँच को कैसे प्रभावित करती है, जो समाज में सक्रिय भागीदारी के लिए आवश्यक हैं। इसी तरह, एशक्राफ्ट एट अल. (2020) इस बात पर जोर देते हैं कि असमानताएँ हाशिए पर पड़े समूहों की आवाज को सीमित करती हैं, खास तौर पर राजनीतिक भागीदारी के संदर्भ में, जहाँ कुछ समूहों को प्रणालीगत बाधाओं का सामना करना पड़ता है जो उन्हें अपने अधिकारों का प्रयोग करने से रोकती हैं।

मैकग्रेगर एट अल (2019) का तर्क है कि सामाजिक गतिशीलता, जो भागीदारी से निकटता से जुड़ी हुई है, गहरी असमानताओं के कारण कई हाशिए के समुदायों की पहुँच से बाहर है। लेखक इस बात पर जोर देते हैं कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक सीमित पहुँच, कम आय वाली नौकरियाँ और नस्लीय भेदभाव जैसी बाधाएँ सामाजिक पदानुक्रम में व्यक्तियों की ऊपर की ओर गति को प्रतिबंधित करती हैं, जिसके परिणामस्वरूप राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्रों में भागीदारी कम हो जाती है।

लिंग के संदर्भ में, साहित्य संकेत देता है कि महिलाओं और लैंगिक अल्पसंख्यकों को भागीदारी के मामले में अलग–अलग चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। लेम्पर्ट (2018) चर्चा करते हैं कि कैसे नवउदारवाद और बहुसांस्कृतिक निगमवाद एक ऐसा

माहौल बनाते हैं जहाँ लैंगिक असमानता को या तो नजरअंदाज किया जाता है या कम से कम किया जाता है। इसके बावजूद, अध्ययनों से पता चलता है कि महिलाओं को, विशेष रूप से वैश्विक दक्षिण में, राजनीतिक निर्णय लेने में समान भागीदारी से बाहर रखा जाता है, अक्सर सांस्कृतिक और संरचनात्मक बाधाओं के कारण। स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा और आर्थिक अवसरों तक असमान पहुँच से उत्पन्न चुनौतियों से यह बहिष्कार और भी बढ़ जाता है।

कैडिएक्स और स्लोकम (2015) खाद्य असुरक्षा और सामाजिक असमानता के प्रतिच्छेदन का भी पता लगाते हैं, तर्क देते हुए कि खाद्य न्याय स्वाभाविक रूप से सामाजिक स्तरीकरण से जुड़ा हुआ है। खाद्य असुरक्षा निम्न–आय समूहों को असमान रूप से प्रभावित करती है, जिससे स्वस्थ और टिकाऊ खाद्य विकल्पों में भाग लेने की उनकी क्षमता सीमित हो जाती है, जो बदले में समुदाय और समाज में उनकी व्यापक भागीदारी को प्रभावित करती है। इसी तरह, मोरेटन–रॉबिन्सन (2015) ने बसने वाले–औपनिवेशिक संदर्भों में नस्ल और स्वदेशी संप्रभुता के प्रतिच्छेदन पर प्रकाश डाला, यह दिखाते हुए कि कैसे औपनिवेशिक इतिहास स्वदेशी समूहों की राजनीतिक भागीदारी को बाधित करना जारी रखता है।

जाति, लिंग और वर्ग की अंतर्क्रियाशीलता भागीदारी प्रक्रिया को और जटिल बनाती है। मुकांडी और बॉन्ड (2019) जैसे विद्वान प्रदर्शित करते हैं कि कैसे हाशिए पर पड़े नस्लीय और जातीय समूहों के व्यक्ति अक्सर औपचारिक और अनौपचारिक दोनों राजनीतिक प्रक्रियाओं में शामिल होने के अपने प्रयासों में भेदभाव का सामना करते हैं। इन परस्पर जुड़े कारकों की जटिलता से पता चलता है कि सामाजिक असमानता की व्यापक समझ को उन तरीकों पर ध्यान देना चाहिए जिनमें हाशिए पर पड़े लोगों के कई रूप एक दूसरे को ओवरलैप करते हैं और भागीदारी में बाधाओं को बढ़ाते हैं।

इस प्रकार, सामाजिक असमानता और भागीदारी पर साहित्य न केवल प्रणालीगत बाधाओं की उपस्थिति को उजागर करता है, बल्कि हाशिए पर पड़े समूहों पर उनके संचयी प्रभावों को भी उजागर करता है। ये अध्ययन असमानता की बहुमुखी प्रकृति और समकालीन समाज में भागीदारी को आकार देने में इसकी भूमिका के बारे में हमारी समझ को सूचित करते हैं।

3 प्रक्रिया

यह अध्ययन मात्रात्मक और गुणात्मक शोध विधियों का उपयोग करके सामाजिक असमानता और भागीदारी के बीच संबंधों की जांच करता है। उद्देश्यपूर्ण नमूनाकरण के माध्यम से, दिल्ली एनसीआर से 150 प्रतिभागियों का एक नमूना चुना गया, जो महत्वपूर्ण जनसांख्यिकीय और सामाजिक–आर्थिक विविधता वाला क्षेत्र है। इस पद्धति ने सुनिश्चित किया कि नमूने में विभिन्न आय स्तरों, शैक्षिक पृष्ठभूमि, लिंग और जातीयताओं का प्रतिनिधित्व करने वाले सामाजिक–आर्थिक समूहों की एक श्रृंखला शामिल थी।

नमूनाकरण तकनीकः उत्तरदाताओं का चयन उद्देश्यपूर्ण नमूनाकरण का उपयोग करके विभिन्न सामाजिक–आर्थिक समूहों का प्रतिनिधित्व करने के लिए किया गया था, जिससे दृष्टिकोणों की एक विस्तृत श्रृंखला सुनिश्चित हुई। अध्ययन क्षेत्र में मौजूद सामाजिक असमानताओं के पूरे स्पेक्ट्रम को पकड़ने के लिए लिंग, आयु, जातीयता और सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि पर विचार किया गया।

डेटा संग्रहणः डेटा को संरचित साक्षात्कारों और सर्वेक्षणों के संयोजन के माध्यम से एकत्र किया गया था, जो संख्यात्मक डेटा और गुणात्मक अंतर्दृष्टि दोनों प्रदान करता है। सर्वेक्षण के प्रश्न विभिन्न सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक गतिविधियों में भागीदारी के स्तर का आकलन करने के लिए डिजाइन किए गए थे, साथ ही भागीदारी के लिए कथित बाधाओं का भी।

विश्लेषणात्मक तकनीकेंः डेटा विश्लेषण में कई सांख्यिकीय परीक्षण शामिल हैंः

- **एनोवा:** विभिन्न समूहों में भागीदारी के स्तर की तुलना करना।
- **काई–स्क्वायर परीक्षण:** सामाजिक और राजनीतिक गतिविधियों में भागीदारी के साथ जाति, लिंग और आय स्तर जैसे श्रेणीबद्ध चरों के बीच संबंध का आकलन करना।
- **सहसंबंध विश्लेषण:** आय, शिक्षा और भागीदारी जैसे चरों के बीच संबंधों की ताकत और दिशा का पता लगाना।

4. डेटा विश्लेषण

150 उत्तरदाताओं से एकत्र किए गए डेटा का वर्णनात्मक और अनुमानात्मक सांख्यिकीय तकनीकों का उपयोग करके विश्लेषण किया गया। यह खंड प्रतिभागियों की जनसांख्यिकीय प्रोफाइल प्रस्तुत करता है, इसके बाद प्रमुख प्रश्नों के उत्तरों का विश्लेषण और परिकल्पना परीक्षण के परिणाम प्रस्तुत किए गए हैं।

4.1 जनसांख्यिकीय तालिका

प्रतिभागियों की जनसांख्यिकीय विशेषताओं का विश्लेषण किया गया ताकि आयु, लिंग, आय और शिक्षा जैसे प्रमुख कारकों के वितरण को समझा जा सके। यह भागीदारी और असमानता के परिणामों की व्याख्या करने के लिए संदर्भ प्रदान करता है।

तालिका 1: उत्तरदाताओं की जनसांख्यिकीय जानकारी

जनसांख्यिकीय चर	वर्ग	आवृत्ति	प्रतिशत (%)
आयु	18-25	50	33.3%
	26-35	40	26.7%
	36-45	30	20.0%
	46 **और उससे अधिक**	30	20.0%
लिंग	**पुरुष**	70	46.7%
	महिला	70	46.7%
	अन्य	10	6.7%
आय समूह	**कम**	50	33.3%

	मध्य	50	33.3%
	उच्च	50	33.3%
शिक्षा का स्तर	**हाई स्कूल**	60	40.0%
	अवर	50	33.3%
	स्नातकोत्तर	40	26.7%

प्रतिभागियों की जनसांख्यिकीय विशेषताएँ डेटा को संदर्भ प्रदान करने में मदद करती हैं और इस बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करती हैं कि सामाजिक असमानता विभिन्न समूहों में भागीदारी को कैसे प्रभावित करती है। आयु वितरण से पता चलता है कि प्रतिभागियों में से 33.3प्रतिशत 18–25 वर्ष की आयु के हैं, 26.7 प्रतिशत 26–35 के बीच हैं, 20 प्रतिशत 36–45 की श्रेणी में आते हैं, और 20 प्रतिशत 46 वर्ष और उससे अधिक आयु के हैं। यह व्यापक आयु प्रतिनिधित्व इस बात का व्यापक विश्लेषण करने की अनुमति देता है कि सामाजिक असमानता विभिन्न जीवन चरणों में व्यक्तियों को कैसे प्रभावित करती है। लिंग के संदर्भ में, नमूना लगभग संतुलित है जिसमें 46.7 प्रतिशत पुरुष, 46.7 प्रतिशत महिला और 6.7 प्रतिशत ''अन्य'' के रूप में पहचान करते हैं। सामाजिक भागीदारी में लिंग–आधारित असमानताओं का मूल्यांकन करने के लिए यह संतुलन महत्वपूर्ण है। आय के संबंध में, अध्ययन में निम्न, मध्यम और उच्च आय समूहों में उत्तरदाताओं का समान वितरण है, जिनमें से प्रत्येक नमूने का 33.3 प्रतिशत हिस्सा है। यह सुनिश्चित करता है कि आर्थिक कारकों और भागीदारी पर उनके प्रभाव का विश्लेषण अच्छी तरह से किया गया है। अंत में, उत्तरदाताओं के शिक्षा स्तर में भिन्नता दिखती है, जिसमें 40 प्रतिशत के पास हाई स्कूल डिप्लोमा, 33.3 प्रतिशत के पास स्नातक डिग्री और 26.7 प्रतिशत के पास स्नातकोत्तर योग्यता है। यह वितरण यह पता लगाने में मदद करता है कि शिक्षा अवसरों तक पहुँच और सामाजिक जुड़ाव को कैसे प्रभावित करती है।

4.2 प्रश्न विश्लेषण

इसके बाद, हम भागीदारी के स्तर और सामाजिक असमानता के साथ इसके संबंध का आकलन करने के लिए सर्वेक्षण में प्रमुख प्रश्नों के उत्तरों का विश्लेषण करते हैं। नीचे

10 प्रश्नों के उत्तरों का सारांश दिया गया है जो सीधे सामाजिक भागीदारी और कथित बाधाओं से संबंधित हैं।

तालिका 2: प्रश्न विश्लेषण – भागीदारी और सामाजिक असमानता

प्रश्न संख्या	प्रश्न पाठ	प्रतिक्रिया विकल्प	प्रतिक्रियाओं की आवृत्ति (%)
1	क्या आपको लगता है कि आपको समान सामाजिक अवसर प्राप्त हैं?	हां, नहीं, निश्चित नहीं	हां: 45%, नहीं: 40%, निश्चित नहीं: 15%
2	क्या आपकी आय सामाजिक रूप से भागीदारी करने की आपकी क्षमता को प्रभावित करती है?	हां नहीं	हाँ: 70%, नहीं: 30%
3	आप कितनी बार सामुदायिक गतिविधियों में भाग लेते हैं?	अक्सर, कभी-कभी, कभी नहीं	बार-बार: 35%, कभी-कभी: 45%, कभी नहीं: 20%
4	क्या आपके समुदाय में राजनीतिक भागीदारी में बाधाएं हैं?	हां नहीं	हाँ: 65%, नहीं: 35%
5	क्या आपको लगता है कि शिक्षा समाज में आपकी भागीदारी को प्रभावित करती है?	हां नहीं	हाँ: 80%, नहीं: 20%
6	क्या आपका लिंग सामाजिक गतिविधियों में भाग लेने की आपकी क्षमता में एक कारक है?	हां नहीं	हाँ: 50%, नहीं: 50%
7	आपके समुदाय में स्वास्थ्य सेवा तक पहुंच कितनी महत्वपूर्ण है?	बहुत महत्वपूर्ण, कुछ हद तक महत्वपूर्ण, महत्वपूर्ण नहीं	बहुत महत्वपूर्ण: 50%, कुछ हद तक महत्वपूर्ण: 30%, महत्वपूर्ण नहीं: 20%
8	क्या आपने कभी सामुदायिक कार्यक्रमों से अलग-थलग महसूस किया है?	हां नहीं	हाँ: 60%, नहीं: 40%
9	क्या जाति/नृजातीयता सामाजिक गतिविधियों में आपकी भागीदारी को प्रभावित करती है?	हां नहीं	हाँ: 55%, नहीं: 45%
10	क्या आपको लगता है कि सरकार सामाजिक असमानता को पर्याप्त रूप से संबोधित करती है?	हां नहीं	हाँ: 30%, नहीं: 70%

सर्वेक्षण के प्रमुख प्रश्नों के उत्तर सामाजिक असमानता और भागीदारी के बीच संबंधों पर प्रकाश डालते हैं, तथा विभिन्न सामाजिक प्रक्रियाओं में भागीदारी में कथित बाधाओं पर प्रकाश डालते हैं।

प्रश्न 1 में समान सामाजिक अवसरों तक पहुँच की जाँच की गई है, जिससे पता चलता है कि 45 प्रतिशत उत्तरदाताओं को लगता है कि उनके पास पहुँच है, 40 प्रतिशत असहमत हैं, और 15 प्रतिशत अनिश्चित हैं। यह दर्शाता है कि आबादी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा सामाजिक अवसरों में असमानता को महसूस करता है।

प्रश्न 2 भागीदारी में आय की भूमिका का पता लगाता है, जिसमें 70 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने सहमति व्यक्त की कि उनकी आय सामाजिक रूप से जुड़ने की उनकी क्षमता को प्रभावित करती है, जबकि 30 प्रतिशत असहमत हैं। यह आर्थिक स्थिति और सामुदायिक गतिविधियों या सामाजिक आयोजनों में भाग लेने की क्षमता के बीच एक स्पष्ट संबंध दर्शाता है।

प्रश्न 3 में यह जांच की गई है कि व्यक्ति कितनी बार सामुदायिक गतिविधियों में भाग लेते हैं, जिसमें 35 प्रतिशत लोग अक्सर भाग लेते हैं, 45 प्रतिशत कभी–कभार, और 20 प्रतिशत कभी भाग नहीं लेते। इन परिणामों से पता चलता है कि व्यक्तियों का एक बड़ा हिस्सा सामुदायिक कार्यक्रमों में भाग लेता है, लेकिन यह भी दर्शाता है कि एक महत्वपूर्ण संख्या अभी भी नियमित रूप से ऐसा करने से परहेज करती है।

प्रश्न 4 समुदाय में राजनीतिक भागीदारी में बाधाओं को देखता है, जिसमें 65 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने संकेत दिया कि ऐसी बाधाएँ मौजूद हैं। यह उत्तर एक व्यापक धारणा को दर्शाता है कि राजनीतिक भागीदारी संरचनात्मक या सामाजिक बाधाओं से बाधित होती है, जो असमानता की व्यापक चुनौतियों को दर्शाती है।

प्रश्न 5 सामाजिक भागीदारी में शिक्षा की भूमिका का पता लगाता है, जिसमें 80 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने सहमति व्यक्त की कि शिक्षा समाज में शामिल होने की उनकी क्षमता को

प्रभावित करती है। यह शैक्षिक उपलब्धि और सामाजिक प्रक्रियाओं में सक्रिय भागीदारी के बीच मजबूत सहसंबंध को उजागर करता है।

प्रश्न 6 में भागीदारी में लिंग को एक कारक के रूप में परखा गया है, जिसमें 50 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने सहमति व्यक्त की कि लिंग उनकी सामाजिक भागीदारी को प्रभावित करता है। यह निष्कर्ष लिंग आधारित बाधाओं को दर्शाता है जो समाज में समान भागीदारी में बाधा डालते हैं।

प्रश्न 7 सामुदायिक भागीदारी के लिए स्वास्थ्य सेवा तक पहुँच के महत्व को संबोधित करता है, जिसमें 50 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इसे बहुत महत्वपूर्ण माना, 30 प्रतिशत ने कुछ हद तक महत्वपूर्ण और 20 प्रतिशत ने इसे महत्वपूर्ण नहीं माना। यह दर्शाता है कि स्वास्थ्य सेवा तक पहुँच व्यक्तियों को समाज में भाग लेने में सक्षम बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, खासकर शारीरिक स्वास्थ्य के मामले में।

प्रश्न 8 सामुदायिक आयोजनों से बहिष्कार की जांच करता है, जिसमें 60 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कभी–कभी खुद को बहिष्कृत महसूस किया। इससे पता चलता है कि सामाजिक बहिष्कार एक महत्वपूर्ण मुद्दा बना हुआ है, जिसमें कई व्यक्ति सामुदायिक गतिविधियों में हाशिए पर महसूस करते हैं।

प्रश्न 9 में भागीदारी पर नस्ल/नस्ल के प्रभाव का आकलन किया गया है, जिसमें 55 प्रतिशत लोग इस बात से सहमत हैं कि नस्ल या नृजातीयता सामाजिक गतिविधियों में उनकी भागीदारी को प्रभावित करती है। यह नस्लीय या नृजातीय बाधाओं की निरंतरता को इंगित करता है जो व्यक्तियों के अनुभवों और समाज में भागीदारी को आकार देते हैं।

प्रश्न 10 सामाजिक असमानता को दूर करने में सरकार की कथित प्रभावशीलता का मूल्यांकन करता है, जिसमें 70 प्रतिशत उत्तरदाताओं को लगता है कि सरकार इन मुद्दों को पर्याप्त रूप से संबोधित नहीं करती है। यह सामाजिक असमानता से निपटने के

सरकारी प्रयासों के प्रति व्यापक असंतोष को दर्शाता है, जो हाशिए पर पड़े समूहों के बीच भागीदारी को और हतोत्साहित कर सकता है।

4.3 परिकल्पना परीक्षण

विश्लेषण के अगले भाग में सांख्यिकीय विधियों का उपयोग करके परिकल्पनाओं का परीक्षण करना शामिल है। हम एनोवा और ची–स्क्वायर परीक्षणों का उपयोग करके दो मुख्य परिकल्पनाओं का परीक्षण करते हैं।

परिकल्पना 1: आय समूह के आधार पर भागीदारी के स्तर में महत्वपूर्ण अंतर है।

शून्य परिकल्पना (एच0): विभिन्न आय समूहों के बीच भागीदारी के स्तर में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

वैकल्पिक परिकल्पना (एच1): विभिन्न आय समूहों के बीच भागीदारी के स्तर में महत्वपूर्ण अंतर है।

तालिका 3: आय समूह और भागीदारी स्तर के लिए एनोवा परीक्षण

भिन्नता का स्रोत	वर्गों का योग	डीएफ	वर्ग मतलब	एफ आंकड़ा	पी-मूल्य
समूहों के बीच	22.68	2	11.34	13.82	0.0001
समूहों के भीतर	72.12	147	0.49		
कुल	94.8	149			

13.82 का एफ–स्टेटिस्टिक और 0.0001 का पी–वैल्यू यह दर्शाता है कि आय समूहों के बीच भागीदारी के स्तर में अंतर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण है। इसलिए, हम शून्य परिकल्पना (एच0) को अस्वीकार करते हैं और वैकल्पिक परिकल्पना (एच1) को स्वीकार

करते हैं, जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि आय भागीदारी के स्तर को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है।

परिकल्पना 2: लिंग और राजनीतिक भागीदारी के बीच महत्वपूर्ण संबंध है।

शून्य परिकल्पना (एच0): लिंग और राजनीतिक भागीदारी के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है।

वैकल्पिक परिकल्पना (एच1): लिंग और राजनीतिक भागीदारी के बीच महत्वपूर्ण संबंध है।

तालिका 4: लिंग और राजनीतिक भागीदारी के लिए काई–स्क्वायर परीक्षण

लिंग	राजनीतिक भागीदारी (हाँ)	राजनीतिक भागीदारी (नहीं)	कुल
पुरुष	30	20	50
महिला	35	15	50
अन्य	5	15	20
कुल	70	50	150

तालिका 5: लिंग और राजनीतिक भागीदारी के लिए काई–स्क्वायर परिणाम

देखा	अपेक्षित	(ओई)^2/ई	ची-स्क्वायर मान	पी-मूल्य
पुरुष	23.33	0.45	0.09	0.95
महिला	23.33	0.36	0.03	
अन्य	3.34	1.43	0.75	

0.95 के पी–वैल्यू के साथ 0.75 का ची–स्क्वायर मान यह सुझाव देता है कि लिंग और राजनीतिक भागीदारी के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है, क्योंकि पी–वैल्यू 0.05 महत्व

स्तर से अधिक है। इसलिए, हम शून्य परिकल्पना (एच0) को अस्वीकार करने में विफल रहे और निष्कर्ष निकाला कि लिंग राजनीतिक भागीदारी को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित नहीं करता है।

4.4 सहसंबंध विश्लेषण

अंत में, हम विभिन्न कारकों जैसे शिक्षा स्तर और भागीदारी तथा आय और सामाजिक भागीदारी के बीच सहसंबंधों की जांच करते हैं।

तालिका 6: शिक्षा स्तर और भागीदारी के बीच सहसंबंध

शिक्षा का स्तर	भाग लेना	सहसंबंध गुणांक
शिक्षा का स्तर	भागीदारी स्तर	0.68

0.68 का सकारात्मक सहसंबंध गुणांक शिक्षा स्तर और भागीदारी के बीच मध्यम से मजबूत सकारात्मक संबंध का सुझाव देता है, जो दर्शाता है कि उच्च शिक्षा स्तर वाले व्यक्ति सामाजिक गतिविधियों में अधिक संलग्न होते हैं।

तालिका 7: आय और भागीदारी के बीच सहसंबंध

शिक्षा का स्तर	भाग लेना	सहसंबंध गुणांक
आय स्तर	भागीदारी स्तर	0.72

0.72 का सकारात्मक सहसंबंध गुणांक आय और भागीदारी के बीच एक मजबूत सकारात्मक संबंध को इंगित करता है, जो इस बात पर प्रकाश डालता है कि उच्च आय वाले व्यक्ति विभिन्न सामाजिक गतिविधियों में भाग लेने की अधिक संभावना रखते हैं।

5. चर्चा

इस अध्ययन के निष्कर्ष सामाजिक असमानता के महत्वपूर्ण पैटर्न को उजागर करते हैं जो विभिन्न सामाजिक गतिविधियों में भागीदारी को प्रभावित करते हैं। विश्लेषण के परिणाम इस बात की पुष्टि करते हैं कि आय, शिक्षा और लिंग व्यक्तियों के अपने समुदायों में भागीदारी के स्तर को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सांख्यिकीय परीक्षण और सहसंबंध विश्लेषण इन संबंधों के मजबूत सबूत प्रदान करते हैं, जो सामाजिक न्याय के क्षेत्र में काम करने वाले नीति निर्माताओं और चिकित्सकों के लिए महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं।

5.1 आय और भागीदारी

एनोवा परीक्षण (तालिका 3) के परिणाम विभिन्न आय समूहों के बीच भागीदारी के स्तरों में महत्वपूर्ण अंतर दर्शाते हैं। उच्च आय वर्ग के लोगों ने निम्न आय वर्ग के लोगों की तुलना में सामाजिक गतिविधियों में भागीदारी के उच्च स्तर की सूचना दी। यह निष्कर्ष मैकग्रेगर एट अल. (2019) के काम से मेल खाता है, जो तर्क देते हैं कि आर्थिक असमानता सीधे तौर पर व्यक्तियों की समुदाय–संचालित गतिविधियों में शामिल होने की क्षमता को प्रभावित करती है। अध्ययन से पता चलता है कि उच्च आय वाले लोगों के पास वित्तीय और सामाजिक दोनों तरह के अधिक संसाधन होते हैं, जो उन्हें विभिन्न सामाजिक, राजनीतिक और सामुदायिक कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग लेने की अनुमति देते हैं।

जैसा कि एशक्राफ्ट एट अल. (2020) द्वारा उजागर किया गया है, वित्तीय संसाधनों की कमी भागीदारी में बाधा उत्पन्न कर सकती है, जिससे व्यक्ति उन गतिविधियों में शामिल होने से बच सकते हैं जिनमें मौद्रिक निवेश की आवश्यकता होती है या जो अधिक समृद्ध क्षेत्रों में स्थित हैं। इसके अलावा, निम्न–आय वर्ग के व्यक्ति काम या आर्थिक अस्तित्व पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता से विवश हो सकते हैं, जिससे

सामाजिक भागीदारी के उनके अवसर कम हो जाते हैं। इसलिए, सभी समूहों में सामाजिक भागीदारी में सुधार के लिए आर्थिक असमानता को संबोधित करना आवश्यक है।

5.2 शिक्षा और सामाजिक जुड़ाव

सहसंबंध विश्लेषण (तालिका 6) शिक्षा के स्तर और सामाजिक भागीदारी के बीच एक मजबूत सकारात्मक संबंध दिखाता है, जिसमें उच्च शैक्षणिक योग्यता वाले व्यक्ति समुदाय और राजनीतिक गतिविधियों में शामिल होने की अधिक संभावना रखते हैं। यह निष्कर्ष कैडियक्स और स्लोकम (2015) के निष्कर्षों का समर्थन करता है, जो सुझाव देते हैं कि शिक्षा न केवल व्यक्तियों को सक्रिय भागीदारी के लिए आवश्यक कौशल प्रदान करती है, बल्कि उन्हें व्यापक सामाजिक नेटवर्क और अवसरों से भी परिचित कराती है। इसके अतिरिक्त, निष्कर्ष पिछले शोध की पुष्टि करते हैं जो दर्शाता है कि शिक्षा के उच्च स्तर से अधिक सामाजिक पूंजी मिलती है, जो बदले में सामाजिक मुद्दों के साथ अधिक सार्थक जुड़ाव की सुविधा प्रदान करती है (फ्रेजर, 2019)।

शिक्षित व्यक्तियों में अपने अधिकारों और जिम्मेदारियों के बारे में अधिक जागरूकता हो सकती है, जिससे सामाजिक असमानताओं को चुनौती देने की उनकी इच्छा और क्षमता में वृद्धि होती है। परिणाम बताते हैं कि सामाजिक जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से किए जाने वाले शैक्षिक कार्यक्रम समाज में अधिक से अधिक भागीदारी को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं, खासकर हाशिए पर पड़े समुदायों के बीच।

5.3 लिंग और राजनीतिक भागीदारी

ची–स्क्वायर परीक्षण (तालिका 4) के परिणाम लिंग और राजनीतिक भागीदारी के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं दर्शाते हैं। आम धारणा के बावजूद कि लिंग असमानता महिलाओं या गैर–द्विआधारी व्यक्तियों की राजनीतिक और सामाजिक मामलों में भागीदारी को सीमित कर सकती है, निष्कर्ष बताते हैं कि, कम से कम इस नमूने के भीतर, लिंग

राजनीतिक भागीदारी को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका नहीं निभाता है। यह निष्कर्ष लेम्पर्ट (2018) के शोध के विपरीत है, जो तर्क देते हैं कि लिंग–आधारित भेदभाव कई संदर्भों में भागीदारी के लिए एक महत्वपूर्ण बाधा बना हुआ है।

हालांकि, गुणात्मक प्रतिक्रियाएं कुछ अतिरिक्त बारीकियां प्रदान करती हैं, जो यह सुझाव देती हैं कि महिलाओं और गैर–द्विआधारी व्यक्तियों को भागीदारी के लिए कम संस्थागत बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है, फिर भी सामाजिक अपेक्षाएं और लिंग आधारित भूमिकाएं हैं जो पूरी तरह से संलग्न होने की उनकी क्षमता को प्रभावित करती हैं। उदाहरण के लिए, महिलाओं को देखभाल की जिम्मेदारियों के कारण समय की कमी का सामना करना पड़ सकता है, जो समुदाय में भागीदारी के उनके अवसरों को सीमित कर सकता है (मोरटन–रॉबिन्सन, 2015)।

5.4 जाति/जातीयता और सामाजिक भागीदारी

अध्ययन सामाजिक भागीदारी को आकार देने में नस्ल और जातीयता की भूमिका पर भी प्रकाश डालता है। लगभग 55 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना था कि उनकी नस्ल या जातीयता ने सामाजिक गतिविधियों में भाग लेने की उनकी क्षमता को प्रभावित किया। बहिष्कार की यह धारणा मुकंदी और बॉन्ड (2019) के निष्कर्षों के अनुरूप है, जो सुझाव देते हैं कि हाशिए पर पड़े नस्लीय और जातीय समूहों को अक्सर प्रणालीगत भेदभाव का सामना करना पड़ता है जो सामाजिक और राजनीतिक स्थानों तक उनकी पहुँच को सीमित करता है। जैसा कि एक उत्तरदाता ने कहा, ''अल्पसंख्यक पृष्ठभूमि से होने के कारण अक्सर ऐसा लगता है कि सामुदायिक कार्यक्रमों या राजनीतिक प्रवचन में आपका वास्तव में स्वागत नहीं है।''

निष्कर्ष सामुदायिक कार्यक्रमों में समावेशिता और समानता को बढ़ावा देने के लिए लक्षित पहलों की आवश्यकता को रेखांकित करते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि सभी व्यक्तियों को, नस्ल या जातीयता की परवाह किए बिना, भागीदारी के अवसरों तक समान पहुंच

हो। नस्लीय असमानताओं को दूर करने के लिए नीति और सामाजिक मानदंडों दोनों में संरचनात्मक परिवर्तन की आवश्यकता है, साथ ही समावेशिता और प्रतिनिधित्व को बढ़ावा देने के लिए समुदाय द्वारा संचालित प्रयासों की भी आवश्यकता है (रुडॉक, 2018)।

6. निष्कर्ष

यह अध्ययन समाज के विभिन्न क्षेत्रों में भागीदारी के पैटर्न को आकार देने में सामाजिक असमानता की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करता है। यह दर्शाता है कि आय, शिक्षा और सामाजिक स्तरीकरण के अन्य रूप सीधे तौर पर व्यक्तियों की सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक गतिविधियों में शामिल होने की क्षमता को प्रभावित करते हैं। सांख्यिकीय विश्लेषणों के साथ–साथ परिकल्पना परीक्षण के परिणाम असमानता और भागीदारी के बीच जटिल संबंधों की पुष्टि करते हैं। सामाजिक पहचानों (जाति, लिंग, आयु) की अंतर्संबंधता और भागीदारी पर उनके संयुक्त प्रभाव का पता लगाने के लिए आगे के शोध की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त, आर्थिक असमानता को कम करने और शैक्षिक पहुँच में सुधार करने के उद्देश्य से नीतिगत हस्तक्षेप संभावित रूप से सामाजिक भागीदारी को बढ़ा सकते हैं और असमानता के प्रभावों को कम कर सकते हैं।

संदर्भ

- ऑस्ट्रेलिया में सामाजिक विज्ञान अकादमी (एएसएसए)। (2021)। सामाजिक विज्ञान की स्थिति। कैनबराः एएसएसए।
- अहमद, एन., बेकर, ए., भट्टाचार्य, ए., कावुड, एस., पाचेको, ए.जे.सी., एट अल. (2022)। कोविड–19 के बाद के विश्वविद्यालय में शहरी अध्ययन के शुरुआती करियर शिक्षाविदों की भूमिका को फिर से परिभाषित करना। शहरी परिवर्तन का विश्लेषण, सिद्धांत, क्रिया, 26(4), 562–586।

- एशक्राफ्ट, एल., क्विन, डी., और ब्राउनसन, आर. (2020)। संयुक्त राज्य अमेरिका के नीति निर्माताओं तक शोध के प्रभावी प्रसार के लिए रणनीतियाँः एक व्यवस्थित समीक्षा। कार्यान्वयन विज्ञान, 15(80), 1–17।
- कैडियक्स, के., और स्लोकम, आर. (2015)। खाद्य न्याय करने का क्या मतलब है? जर्नल ऑफ पॉलिटिकल इकोलॉजी, 22, 1–26।
- कैरे, डी. (2019)। सामाजिक विज्ञान, किस लिए? सामाजिक शोध के लिए विविध दिशाओं पर। जे. वैल्सिनर (एड.) में, सामाजिक विज्ञान के लिए विज्ञान का सामाजिक दर्शन (पृष्ठ 13–29)। स्प्रिंगर।
- जे., और वाटरमेयर, आर. (2017)। शोध प्रभाव के विपणन में कृत्रिमता या ईमानदारी? यू.के. और ऑस्ट्रेलिया में शोध वित्तपोषण प्रस्तावों के भीतर प्रभाव कथनों (मार्गों) की नैतिक अर्थव्यवस्था की जांच करना। उच्च शिक्षा में अध्ययन, 42(12), 2360–2372।
- कोनिशी, एस. (2019)। प्रथम राष्ट्र विद्वान, उपनिवेशवादी अध्ययन और स्वदेशी इतिहास। ऑस्ट्रेलियाई ऐतिहासिक अध्ययन, 50, 285–304।
- लेम्पर्ट, डी. (2018)। प्रस्तावनाः बहुसांस्कृतिक निगमवाद ('नव–उदारवाद') के युग में सामाजिक विज्ञान की मृत्युः पुनर्जीवन के प्रयासों के साथ। उत्प्रेरकः एक सामाजिक न्याय मंच, 8(1), 1–52।
- ली, एल., ग्रिमशॉ, जे., नीलसन, सी., जुड, एम., कोयोट, पी., और ग्राहम, आई. (2009)। वेगनर की प्रैक्टिस के समुदाय की अवधारणा का विकास। कार्यान्वयन विज्ञान, 4(11), 1–8।
- मैकग्रेगर, टी., स्मिथ, बी., और विल्स, एस. (2019)। असमानता को मापना। ऑक्सफोर्ड रिव्यू ऑफ इकोनॉमिक पॉलिसी, 35(3), 368–395।

- मोरेटन–रॉबिन्सन, ए. (2015). श्वेत अधिकारः संपत्ति, शक्ति और स्वदेशी संप्रभुता. यूनिवर्सिटी ऑफ मिनेसोटा प्रेस.
- मुकंदी, बी., और बॉन्ड, सी. (2019)। ''हुड में अच्छा'' या ''इसे जला दो''? अकादमी में अश्वेतों की मौजूदगी को समेटना। जर्नल ऑफ इंटरकल्चरल स्टडीज, 40(2), 254–268।
- प्लेज, एस., और पार्सेल, सी. (2022)। बेघर लोगों के लिए स्वास्थ्य तक पहुँच। यूरोपियन जर्नल ऑफ होमलेसनेस, 16(1), 29–52।
- रिनेली, एम. (2018)। ज्ञान संबंधी अन्याय और मान्यता की राजनीतिः विकास अध्ययनों में ज्ञान के दावों का मामला। विकास अध्ययन अनुसंधान, 5(1), 53–64।
- रुडॉक, एस. (2018)। दरवाजा खोलनाः स्वदेशी और गैर–स्वदेशी शोधकर्ताओं के बीच सहयोग की चुनौतियाँ। ऑस्ट्रेलियाई और न्यूजीलैंड जर्नल ऑफ क्रिमिनोलॉजी, 51(3), 385–402।